Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 1 | May 2023 - October 2023 | pp. 58-64

रूस-यूक्रेन संघर्ष

डॉ. अनिल कुमार यादव
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर (राजस्थान)

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

शोध सारांश

यूक्रेन, रूस के बाद यूरोप का दूसरा बड़ा राष्ट्र है "जिसका क्षेत्रफल 6,03,700 वर्ग किलोमीटर है"1 तथा यह यूरोप महाद्वीप का लगभग 6 प्रतिशत है। जुलाई, 2021 में यूक्रेन की जनसंख्या 43.7 मिलियन थी। इसमें कुल जनसंख्या का 77.8 प्रतिशत यूक्रेनी नृजातीयता एवं 17.3 प्रतिशत रूसी नृजातीयता से सम्बन्धित थी। यूक्रेनी एवं रूसी भाषियों की आबादी क्रमशः 67.5 प्रतिशत और 29.6 प्रतिशत थी। प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य रूस एवं यूक्रेन के मध्य ऐतिहासिक सम्बन्धों का विश्लेषण करते हुए दोनों देशों के बीच संघर्ष के कारणों को जानना है, साथ ही इस संघर्ष में निहित रूस के भू-राजनीतिक एवं रणनीतिक उद्देश्यों का पता लगाना है। शोध पत्र में रूस एवं यूक्रेन के मध्य जारी विवाद के इतिहास को खंगालते हुए वर्तमान संकट का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। शोध पत्र में रूस-यूक्रेन के मध्य शांति बहाली हेतु किए गए मिन्स्क समझौते का भी उल्लेख किया गया है। रूस तथा यूक्रेन युद्ध की मौजूदा स्थिति का उल्लेख करते हुए इस संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया की चर्चा भी इस शोध पत्र में की गई है। रूस-यूक्रेन संकट पर भारत के दृष्टिकोण की विवेचना भी शोध पत्र में की गई है, साथ ही इस युद्ध के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास भी इस शोध पत्र में किया गया है।

संकेताक्षर—*बोल्शेविक क्रान्ति, होलोडोमोर, ऑरेन्ज क्रान्ति,, डी-नाजिफाई, यूरोमैडन प्रोटेस्ट*

प्रस्तावना

यूक्रेन, पूर्वी यूरोप में स्थित एक देश है। इसकी राजधानी कीव है जो उत्तर-मध्य यूक्रेन में नीपर नदी के तट पर स्थित है। यूक्रेन की सीमा पूर्व और उत्तर पूर्व में रूस, उत्तर में बेलारूस, पश्चिम में पोलैंड, स्लोवाकिया एवं हंगरी, दक्षिण में रोमानिया तथा मोल्दोवा से मिलती है। सूदूर दक्षिण-पूर्व में यूक्रेन को केर्च जलडमरूमध्य (Kerch Strait) द्वारा रूस से अलग किया गया है जो आजोव सागर को काला सागर से जोड़ता है। रूस एवं यूक्रेन सैकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक, भाषाई तथा पारिवारिक सम्बन्धों को साझा करते हैं। 18वीं शताब्दी में रूस की महारानी कैथरीन द ग्रेट (1762-96) ने पूरे यूक्रेन के क्षेत्र को रूसी साम्राज्य में मिला लिया था। रूसीकरण की जारिस्ट नीति द्वारा यूक्रेन की जातीय पहचान एवं यूक्रेनी भाषा का दमन किया गया। हालाँकि रूसी साम्राज्य में कई यूक्रेनियन महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हुए एवं समृद्धि हासिल की। ये यूक्रेनियन रूस के कई हिस्सों में बस गए। प्रथम विश्व युद्ध में करीब 3.5 मिलियन से अधिक यूक्रेनवासियों ने रूसी साम्राज्य के पक्ष में लड़ाई लड़ी तथा एक छोटी संख्या ने आस्ट्रो-हंगेरियन के साथ जार की सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण जार साम्राज्य एवं ओटोमन साम्राज्य दोनों का अंत हो गया, तत्पश्चात् यूक्रेनी राष्ट्रीय आन्दोलन का उदय हुआ, जिसमें कई छोटे-छोटे यूक्रेनी राज्य उभरे। वर्ष 1917 की अक्टूबर क्रान्ति में बोल्शेविकों के सत्ता में आने के कई महीनों के पश्चात् एक स्वतंत्र यूक्रेनियन पीपुल्स रिपब्लिक

(यूएनआर) की घोषणा की गई। वर्ष 1922 में यूक्रेन सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक (यू.एस.एस.आर.) संघ का हिस्सा बन गया। हालाँकि 1930 के दशक की शुरूआत में जोसेफ स्टालिन यूक्रेनी राजनीतिक राष्ट्र को कुचलने की ठान चुके थे। यूक्रेन राजनीतिक राष्ट्र के रूप में बोल्शेविक क्रान्ति की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ था। 1932-33 के राज्य प्रायोजित अकाल में लगभग 40 लाख यूक्रेनी किसान मारे गए, जिसे यूक्रेन में 'होलोडोमोर' (यानी भुखमरी के माध्यम से हत्या) के रूप में जाना जाता है एवं एक नरसंहार माना जाता है। स्टालिन ने यूक्रेनी सांस्कृतिक अभिजात वर्ग को भी नष्ट कर दिया और जार के काल से प्रचलित धारणा कि यूक्रेनी रूसियों के 'छोटे भाई' है, इसे बढ़ावा देना शुरू कर दिया। इस प्रकार यूक्रेन जबरन 'छोटे भाई' की तरह सोवियत संघ का हिस्सा बना रहा। दिसम्बर, 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् दिसम्बर, 1991 में ही यूक्रेनी जनमत संग्रह ने खुद को सोवियत संघ से पृथक कर लिया।

वर्ष 1997 में रूस एवं यूक्रेन के मध्य एक व्यापक सन्धि ने यूक्रेनी सीमाओं की अखण्डता की पुष्टि की थी। इस सन्धि की गारन्टी रूस तथा पश्चिमी परमाणु शक्तियों ने बुडापेस्ट ज्ञापन (1994) में दी थी, जब यूक्रेन अपने सोवियत निर्मित परमाणु शस्त्रागार को आत्मसमर्पण करने के लिए सहमत हुआ था। यह सन्धि 31 मार्च, 2019 को समाप्त हो गई। वर्तमान में "यूक्रेन यूरोपीय संघ में शामिल होने की प्रक्रिया में है और उसने नाटो सदस्यता के लिए आवेदन जमा किया है।"[2]

रूस-यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि

रूस एवं यूक्रेन के मध्य विद्यमान मौजूदा संकट गत एक दशक, विशेषकर वर्ष 2014 से लेकर वर्तमान तक दोनों पक्षों द्वारा की गई तनाव पैदा करने वाली गतिविधियों का परिणाम है। प्रारम्भ में यूक्रेन ने रूस के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों का विकास किया। वर्ष 1994 में यूक्रेन ने परमाणु हथियारों को इस आधार पर छोड़ दिया, क्योंकि उसे संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन एवं रूस द्वारा सुरक्षा की गारन्टी प्रदान की गई थी। यूक्रेन ने 21वीं शताब्दी के पहले दशक में सोवियत प्रभाव से स्वतंत्र होने की नीति अपनाई। नवम्बर, 2004 में सम्पन्न यूक्रेन के चुनावों में रूस समर्थक तत्कालीन प्रधानमन्त्री विक्टर यानुकोविच राष्ट्रपति पद हेतु चुनाव जीते। परन्तु यूक्रेन के अन्य राजनीतिक दलों एवं पश्चिमी देशों ने यानुकोविच पर चुनावों में धांधली का आरोप लगाया। इस धांधली के विरूद्ध एवं विपक्षी उम्मीदवार विक्टर युशचेंको के समर्थन में दिसम्बर, 2004 एवं जनवरी, 2005 में जनता द्वारा विशाल जन आन्दोलन चलाया गया, जिसे ऑरैन्ज क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। यूक्रेन के सर्वोच्च न्यायालय ने इन चुनावों को रद्द करते हुए पुनः चुनाव कराए जाने का आदेश दिया। दोबारा सम्पन्न हुए चुनावों में यानुकोविच चुनाव हार गए एवं उन्हें सत्ता से हटना पड़ा।

वर्ष 2008 में यूक्रेन ने नाटो की सदस्यता प्राप्त करने के लिए औपचारिक रूप से आवेदन प्रस्तुत किया। रूस ने इसे अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानते हुए यूक्रेन की नाटो की सदस्यता का विरोध किया। वर्ष 2010 में विक्टर यानुकोविच पुनः यूक्रेन में सत्ता प्राप्त करने में सफल हुए। यानुकोविच ने 2013 में पश्चिमी प्रभाव को कम करने की नीति अपनाई। इसी के मद्देनज़र यानुकोविच ने यूक्रेन सरकार के यूरोपीय संघ-यूक्रेन एसोसिएशन समझौते पर रोक लगा दी। इस समझौते पर रोक लगाने के निर्णय के विरोध में यूक्रेन की आम जनता ने एवं वहाँ के विपक्षी दलों ने 2014 के आरम्भ में पुनः एक आन्दोलन चलाया, जिसे 'यूरोमैडन प्रोटेस्ट' के नाम से जाना जाता है। हफ्तों के विरोध के बाद यानुकोविच एवं यूक्रेनी संसद के विपक्षी नेताओं ने 21 फरवरी, 2014 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें शीघ्र चुनाव का आह्वान किया गया। अगले दिन यानुकोविच कीव से भाग गए एवं उन्होंने रूस में शरण ली। यूक्रेन के रूसी भाषी पूर्वी क्षेत्रों के नेताओं ने यानुकोविच के प्रति निरन्तर वफादारी की घोषणा की, जिसके कारण यूक्रेन में 2014 में रूस समर्थक उपद्रव हुए। इन उपद्रवों के पश्चात् रूस ने मार्च, 2014 में सेना भेजकर यूक्रेन के प्रायद्वीप क्रीमिया पर कब्जा कर लिया। रूस ने जल्दबाजी में जनमत संग्रह के बाद क्रीमिया को यूक्रेन से अलग कर दिया। रूस के समर्थन से डोनबास क्षेत्र के दो प्रान्त डोनेस्क एवं लुहान्स्क, जो पूर्वी यूक्रेन में स्थित है तथा जो रूस के साथ सीमा साझा करते हैं, में दो अलगाववादी क्षेत्र है, जिन्हें डोनेस्क पीपुल्स रिपब्लिक (डीपीआर) एवं लुहान्स्क पीपुल्स रिपब्लिक (एलपीआर) के नाम से जाना जाता है, जो रूस समर्थित अलगाववादियों द्वारा चलाए जा रहे हैं। रूस लम्बे समय से दावा करता आ रहा है कि चूँकि ये मुख्य रूप से रूसी भाषी क्षेत्र है, इसलिए उन्हें 'यूक्रेनी राष्ट्रवाद' से संरक्षित करने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में यूक्रेनी इतिहासकार

सेरही प्लोखी ने 'द न्यू यार्कर' को दिए गए साक्षात्कार में इस विचार पर कि यूक्रेन में एक जन समूह अभी भी रूसी साम्राज्यवाद से खुद को जोड़ता है, पर कहते हैं कि "निश्चित रूप से उस विचार को 2014 में क्रीमिया में कर्षण मिला। वहाँ की अधिकांश आबादी जातीयता से रूसी थी और इसे डोनबास में भी आबादी के एक हिस्से के मध्य कर्षण मिला था, जिसकी एक लोकप्रिय सोवियत पहचान थी। वहाँ के लोग वास्तव में एक बहिष्करणीय पहचान के इस विचार से इन्कार कर रहे थे और इसने इस विचार के लिए कुछ आधार बनाए कि हाँ, शायद हम यूक्रेनियन है, लेकिन हमारे बीच एक बड़ी रूसी भूमिका के लिए भी जगह है।"[3]

यूक्रेन में अलगाववादी समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के लिए यूक्रेन एवं रूस समर्थित अलगाववादियों में सितम्बर, 2014 में बेलारूस की राजधानी मिन्स्क में बारह सूत्रीय युद्ध विराम समझौते पर सहमति बनी, जिसमें हथियार हटाने, कैदी विनिमय एवं मानवीय सहायता जैसे प्रावधान शामिल थे। परन्तु दोनों पक्षों द्वारा उल्लंघन किए जाने के बाद यह समझौता विफल हो गया। वर्ष 2015 में फ्रांस एवं जर्मनी की मध्यस्थता से दोनों पक्षों ने मिन्स्क II नामक एक अन्य प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए। इस प्रोटोकॉल की सबसे प्रमुख बात यह थी कि इसमें दोनों पक्षों द्वारा युद्ध विराम की घोषणा की गई थी। साथ ही इन दोनों अलगाववादी प्रान्तों (डोनेस्क एवं लुहान्स्क) को अधिक स्वायत्तता प्रदान कर नये चुनावों की बात को भी शामिल किया गया था, लेकिन यूक्रेन एवं रूस के बीच मतभेदों के कारण ये धाराएँ लागू नहीं हो पायी।

रूस-यूक्रेन : वर्तमान संकट

रूस-यूक्रेन के वर्तमान संकट के स्वरूप की शुरूआत 24 फरवरी, 2022 से होती है, जब रूस ने यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण कर दिया। रूस द्वारा यूक्रेन के विरूद्ध इस सैन्य अभियान को 'स्पेशल मिलिटरी ऑपरेशन' का नाम दिया गया। इससे पूर्व यूक्रेन के वर्तमान राष्ट्रपति जेलेन्स्की ने यूक्रेन के संविधान में संशोधन करते हुए यह प्रावधान किया कि यूक्रेन नाटो तथा यूरोपीय संघ की सदस्यता प्राप्त करेगा। इसके साथ ही राष्ट्रपति जेलेन्स्की ने यूक्रेन की नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को मंजूरी दी, जो नाटो की सदस्यता के उद्देश्य के साथ विशिष्ट साझेदारी के विकास का समर्थन करती है। इसी प्रकार जेलेन्स्की ने मार्च, 2021 में एक आदेश निकालकर ऑटोनॉमस रिपब्लिक ऑफ क्रीमिया और सेवस्तोपोल शहर के अस्थायी रूप से कब्जे वाले क्षेत्र के कब्जे और पुनर्निवेश की रणनीति की मंजूरी दी। इस घटनाक्रम ने रूस को दो बातों का अहसास करवाया कि यूक्रेन शीघ्र ही नाटो की सदस्यता हासिल करेगा तथा यूक्रेन नाटो के सहयोग से क्रीमिया को वापस हासिल करना चाहता है।

नाटो द्वारा मार्च, 2021 में किए गये यूरोप के अब तक के सबसे बड़े सैनिक अभ्यास 'डिफेण्डर यूरोप 2021' ने रूस की चिन्ता को और बढ़ा दिया। साथ ही नाटो ने जून, 2021 में घोषणा की कि नाटो की सदस्यता प्राप्त करना यूक्रेन का सार्वभौमिक अधिकार है। इन सब घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में रूस ने कहा कि नाटो के लिए एक संभावित यूक्रेनी परिग्रहण और नाटो का विस्तार सामान्य रूप से रूस की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। इसी संदर्भ में रूस ने मार्च से अप्रैल, 2021 तक यूक्रेन की सीमा वाले क्षेत्रों के पास सैन्य निर्माण का कार्य शुरू किया एवं सैन्य अभ्यास के नाम पर अतिरिक्त सेनाओं की तैनाती युक्रेन के बार्डर पर करना शुरू कर दिया। जुलाई, 2021 में पुतिन ने "ऑन द हिस्टोरिकल यूनिटी ऑफ रशियन एण्ड यूक्रेनियन" नामक एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें पुतिन ने अपने विचार की फिर से पुष्टि की कि "रूसी और यूक्रेनियन एक ही लोग थे।"[4] यूरोपियन देशों ने पुतिन के इस वक्तव्य का विरोध किया।

रूस के सैन्य विस्तार का दूसरा चरण अक्टूबर, 2021 से शुरू हुआ। रूस ने यूक्रेन की पूर्वी सीमा पर क्रीमिया में तथा यूक्रेन के उत्तर में बेलारूस में अपनी सेनाये तैनात करना प्रारम्भ कर दिया। यूरोपियन देशों ने इसे यूक्रेन के विरूद्ध रूस की युद्ध की तैयारी के रूप में व्याख्या की। रूस बार-बार इस बात से इन्कार करता रहा कि उसकी यूक्रेन पर आक्रमण करने की योजना है। नवम्बर, 2021 के मध्य में पुतिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने संवाददाताओं से कहा कि "रूस किसी को धमकी नहीं देता है। हमारे क्षेत्र में सैनिकों की आवाजाही किसी की चिन्ता का कारण नहीं होना चाहिए।"

दूसरी तरफ रूस ने यूक्रेन की सरकार पर रूसी भाषियों पर अत्याचार करने का आरोप लगाया। 9 दिसम्बर, 2021 को राष्ट्रपति पुतिन ने रूस के बाहर रूसी बोलने वालों के साथ भेदभाव की बात करते हुए कहा—मुझे कहना होगा कि रूसोफोबिया नरसंहार की ओर पहला कदम है। आप और मैं

जानते हैं कि डोनबास में क्या हो रहा है। यह निश्चित रूप से बहुत हद तक नरसंहार जैसा दिखता है। 15 फरवरी, 2022 को पुतिन ने प्रेस से कहा "डोनबास में जो हो रहा है, वह बिल्कुल नरसंहार है। यूरोपीय आयोग ने रूस के इन आरोपों को रूसी दुष्प्रचार कहा। अमेरिकी विदेश विभाग के एक प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा कि मास्को, यूक्रेन पर हमला करने के बहाने के लिए इस तरह के दावे कर रहा है। 21 फरवरी, 2022 को एक भाषण में राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेनी समाज पर नव-नाजी बनने का आरोप लगाया और कहा कि रूस का उद्देश्य यूक्रेन को 'डी नाजिफाई' करना है।

युद्ध की दिशा में अग्रसर होते रूस ने इस दिशा में एक बड़ा कदम 21 फरवरी, 2022 को यह उठाया कि उसने यूक्रेन से अलग होने का दावा करने वाले पूर्वी यूक्रेन के दो क्षेत्रों लुहान्स्क एवं डोनेस्क को अलग गणराज्यों के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। उसी दिन क्रेमलिन में सैन्य अधिकारियों की एक बैठक में राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन को मूलतः रूस का ही हिस्सा बताते हुए कहा कि सोवियत संघ के पहले मार्क्सवादी नेता व्लादिमीर लेनिन ने रूस के साथ भेदभाव करते हुए यूक्रेन को अलग गणराज्य बना दिया था।

ऐसे में रूस के इरादे अब किसी से छिपे हुए नहीं थे। उपग्रह से प्राप्त चित्रों एवं अपनी खुफिया रिपोर्टों के आधार पर अमरीका ने 48 घण्टों के भीतर रूसी हमले की चेतावनी यूक्रेन को 23 फरवरी को ही दे दी थी। अमरीका व उसके सहयोगी राष्ट्रों ने रूस के विरूद्ध अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगाने की घोषणा भी 23 फरवरी को की थी। रूस एवं यूक्रेन के मध्य लम्बे समय से चल रहे शीत युद्ध की परिणति अन्ततः यूक्रेन पर रूस के भीषण आक्रमण के रूप में हुई। "24 फरवरी को रूस ने जल, थल एवं वायु मार्ग से यूक्रेन पर भीषण हमले किए।"[5] किसी भी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय दबावों को दरकिनार करते हुए रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यह स्पष्ट चेतावनी दे डाली कि इस युद्ध में हस्तक्षेप करने वालों को ऐसे भीषण अंजाम झेलने होंगे, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी।

रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण

(1) शक्ति सन्तुलन—जब से यूक्रेन सोवियत संघ से अलग हुआ है तब से रूस एवं पश्चिमी देश इस क्षेत्र में शक्ति सन्तुलन को अपने पक्ष में रखने के लिए एवं यूक्रेन को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे हैं।

(2) पश्चिमी देशों के लिए बफर जोन—अमेरिका एवं यूरोपीय संघ के लिए यूक्रेन, रूस और पश्चिम के बीच एक महत्त्वपूर्ण बफर है। जैसे-जैसे रूस के साथ तनाव बढ़ रहा है, अमेरिका एवं यूरोपीय संघ यूक्रेन को रूसी नियन्त्रण से दूर रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हो रहे हैं।

(3) काला सागर में रूस के हित—काला सागर क्षेत्र का अनोखा भूगोल रूस को कई भू-राजनीतिक लाभ प्रदान करता है। काला सागर पूरे क्षेत्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण रणनीतिक चौराहा है। दूसरे यह क्षेत्र माल एवं ऊर्जा के लिए एक महत्त्वपूर्ण पारगमन गलियारा है।

(4) यूरोमैडन आन्दोलन—यूक्रेन में रूस समर्थित यानुकोविच के राष्ट्रपति बनने पर विपक्षी दलों एवं आम जनता द्वारा यानुकोविच के खिलाफ चलाये गए आन्दोलन के पीछे रूस पश्चिमी देशों को जिम्मेदार मानता है।

(5) अलगाववादी आन्दोलन—पूर्वी यूक्रेन का डोनबास क्षेत्र (डोनेस्क एवं लुहान्स्क) 2014 से रूस समर्थक अलगाववादी आन्दोलन का सामना कर रहा है। यूक्रेनी सरकार के अनुसार आन्दोलन को रूसी सरकार द्वारा सक्रिय रूप से समर्थन प्राप्त है एवं यूक्रेनी सरकार के खिलाफ लड़ने वाले अलगाववादियों में रूसी अर्धसैनिक बलों की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत से 80 प्रतिशत के बीच है।

(6) क्रीमिया पर रूस का कब्जा—रूस ने 2014 में क्रीमिया पर कब्जा कर लिया था। यूक्रेन से क्रीमिया का रूस में विलय क्रीमिया में रूसी सैन्य हस्तक्षेप के बाद हुआ था, जो 2014 की यूक्रेनी क्रान्ति के पश्चात् हुआ था। क्रीमिया पर आक्रमण एवं उसके बाद के कब्जे ने रूस को इस क्षेत्र में समुद्री बढ़त प्रदान कर दी है।

(7) यूक्रेन की नाटो की सदस्यता का प्रश्न—यूक्रेन नाटो (उत्तर अटलांटिक सन्धि संगठन) की सदस्यता हेतु वर्षों से प्रयासरत है। रूस, यूक्रेन के इस कदम को अपनी सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा मानता है। रूस ने यूक्रेन के इस कदम को 'रेड लाइन' घोषित किया है। रूस, अमेरिका से यह आश्वासन चाह रहा है कि यूक्रेन को नाटो में शामिल नहीं किया जायेगा। हालाँकि अमेरिका ऐसा कोई भी आश्वासन देने को तैयार नहीं है।

रूस को पूर्वी यूरोप में नाटो की बढ़ती हुई सैन्य गतिविधियों से तथा यूक्रेन द्वारा नाटो की सदस्यता की आशंका से सुरक्षा

की चिन्ता सता रही है। साथ ही रूस को क्रीमिया के नुकसान की चिन्ता भी परेशान कर रही है, क्योंकि वर्ष 2021 में ही यूक्रेन के वर्तमान राष्ट्रपति जेलेन्स्की ने क्रीमिया को रूस से मुक्त कराने एवं क्रीमिया को पुनः यूक्रेन के साथ मिलाने के आदेश पारित किए थे। इसी सुरक्षा चिन्ता के मद्देनज़र रूस ने दिसम्बर, 2021 में अमेरिका तथा नाटो के समक्ष लिखित रूप से दो माँगे प्रस्तुत की थी—

"**प्रथम** यह कि रूस को इस बात की लिखित गारन्टी दी जाए कि यूक्रेन को नाटो की सदस्यता नहीं प्रदान की जायेगी। **द्वितीय** यह कि पूर्वी यूरोप में नाटों की सैनिक तैनाती व अन्य सैनिक गतिविधियों को सीमित किया जाए। उल्लेखनीय है कि पूर्वी यूरोप के दो देशों—पोलैंड तथा रोमानिया में नाटो तथा अमेरिका द्वारा मिसाइलों की तैनाती की गई है तथा रूस इन हथियारों को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है। अतः रूस ने इन हथियारों को हटाने की माँग की है।"[6]

यूक्रेन में रूसी सैन्य अभियान के उद्देश्य

रूस द्वारा यूक्रेन पर की जा रही सैन्य कार्यवाही के उद्देश्य निम्नानुसार है—

(1) रूस, यूक्रेन को नाटो में जाने से रोकना चाहता है एवं उसे एक तटस्थ देश बनाना चाहता है। रूस, यूक्रेन की नाटो की सदस्यता का विरोध इसलिए करता हैं, क्योंकि इससे नाटो की सेना रूस के पड़ोसी राष्ट्र यूक्रेन में तैनात हो जायेगी, जिसके परिणामस्वरूप रूस की सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो जायेगा।

(2) रूस के सैन्य अभियान का दूसरा उद्देश्य यूक्रेन को सैनिक दृष्टिकोण से कमजोर करना है। यूक्रेन विगत एक दशक से नाटो का सदस्य ना होते हुए भी अमेरिका से हथियार एवं बड़ी सैन्य सहायता प्राप्त करता रहा है। रूस को भय है कि यूक्रेन, अमेरिका की सहायता से अपनी सैन्य शक्ति का विस्तार इसलिए कर रहा है कि वह रूस को सैनिक चुनौती दे सके।

(3) रूस का तीसरा उद्देश्य यूक्रेन को नाजीवादी विचारधारा वाले समूहों से मुक्त करना है। "वर्तमान में यूक्रेनी सेना की अजोव बटालियन उग्र राष्ट्रवादी व नाजीवादी विचारधारा में विश्वास करती है। इसका गठन 2014 में क्रीमिया पर रूस के कब्जे के बाद एक प्राइवेट सेना के रूप में हुआ था, लेकिन बाद में इसे यूक्रेन की सेना में शामिल कर लिया गया। रूस का आरोप है कि अजोव बटालियन के लड़ाकों ने 2014 से लेकर अब तक पूर्वी यूक्रेन में रूस समर्थित हजारों नागरिकों की हत्या की है। अतः इसकी समाप्ति आवश्यक है।"[7]

(4) रूस के सैनिक अभियान का एक अन्य महत्त्वपूर्ण उद्देश्य क्रीमिया पर रूस के कब्जे को यूक्रेन से मान्यता हासिल करना है। इसी प्रकार युद्ध से पूर्व स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दिए गए यूक्रेन के दो प्रान्तों डोनेस्क एवं लुहान्स्क के लिए यूक्रेन की मान्यता प्राप्त करना है।

दूसरी तरफ यूक्रेन में जेलेन्स्की के नेतृत्व वाली सरकार शीघ्रातिशीघ्र नाटो की सदस्यता लेना चाहती है। नाटो की सदस्यता के माध्यम से यूक्रेन रूस के प्रभाव को समाप्त करना चाहता है। हालाँकि नाटो के सदस्य राष्ट्र रूस से विवाद से बचने के लिए यूक्रेन की नाटो की सदस्यता को टालते रहे हैं।

रूस-यूक्रेन संकट तथा भारत

जहाँ तक रूस-यूक्रेन संकट के सम्बन्ध में भारत का सवाल है, तो भारत, रूस एवं यूक्रेन के इस विवाद को शान्तिपूर्ण ढंग से वार्ता की मेज पर सुलझाने का पक्षधर रहा है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने सितम्बर, 2022 में उज्बेकिस्तान के शहर समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में हिस्सा लिया था, तब इस बैठक से इतर उन्होंने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से अपनी द्विपक्षीय वार्ता के दौरान स्पष्ट रूप से कहा था कि "यह युग युद्ध का युग नहीं है।" फिर भी यूक्रेन के सन्दर्भ में भारत की तटस्थता अभी कसौटी पर है। भारत इस उम्मीद में धैर्यपूर्वक रवैया बनाए हुए है कि कुशल वार्ताकारों द्वारा स्थिति को शान्तिपूर्वक सम्भाला जायेगा। भारत ने हाल ही में इस मुद्दे पर बात की है और दीर्घकालीन शान्ति और स्थिरता के लिए निरन्तर राजनयिक प्रयासों के माध्यम से इस मुद्दे के शान्तिपूर्ण समाधान का आह्वान किया है, लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत ने 2014 में क्रीमिया पर रूस के कब्जे के पश्चात् यूक्रेन की क्षेत्रीय अखण्डता को बरकरार रखने वाले संयुक्त राष्ट्र के एक प्रस्ताव में मतदान करने से परहेज किया था।

फरवरी, 2022 में यूक्रेन पर रूसी हमले के पश्चात् रूस की सख्त निंदा के लिए सुरक्षा परिषद में लाए गए एक प्रस्ताव पर तटस्थ रहते हुए भारत मतदान से अलग ही रहा। अमेरिका द्वारा लाए गए इस प्रस्ताव पर मतदान से अलग रहने वाले तीन देश भारत, चीन एवं संयुक्त अरब अमीरात थे। "28 फरवरी

को अन्य मतदान में भी भारत ने स्वयं को मतदान से अलग रखा। संयुक्त राष्ट्र महासभा का विशेष आपात सत्र बुलाने के लिए लाए गए प्रस्ताव के लिए 11 सदस्यों ने समर्थन किया। तदुनुरूप महासभा की विशेष बैठक 28 फरवरी को बुलाई गई। महासभा की 2 मार्च, 2022 को सम्पन्न इस बैठक में बेलारूस, उत्तर कोरिया, इरीट्रिया व सीरिया सहित पाँच देशों ने रूस के समर्थन में मत दिया, वहीं भारत सहित 34 देशों ने मतदान में अनुपस्थिति दर्ज की।"[8]

कुल मिलाकर यूक्रेन युद्ध में भारत ने तटस्थता की नीति अपनाई है। इस नीति के महत्त्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित है—

(क) भारत ने यूक्रेन में हिंसा रोकने एवं युद्ध बंद करने की अपील की है।

(ख) भारत ने इस समस्या का बातचीत द्वारा शान्तिपूर्ण समाधान की माँग की है।

(ग) भारत ने प्रतिरक्षा सहित अन्य क्षेत्रों में रूस के साथ घनिष्ठ सामरिक सम्बन्धों की वजह से इस आक्रमण के लिए रूस की आलोचना नहीं की है। हालाँकि भारत ने बूचा नरसंहारों की आलोचना करते हुए उसकी स्वतंत्र जाँच की माँग की है।

भारत का यह स्वतंत्र व तटस्थ दृष्टिकोण स्वागत योग्य है, परन्तु अमेरिका भारत के इस दृष्टिकोण से प्रसन्न नहीं है। अमेरिका, रूस के विरूद्ध अपनी नीतियों के प्रति भारत का खुलकर समर्थन चाहता है। परन्तु भारत ऐसा करने से बच रहा है। भारत का मानना है कि उसके व्यापक हितों की पूर्ति के लिए रूस तथा अमेरिका दोनों से उसके सन्तुलित सम्बन्ध होना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में अमेरिका के राष्ट्रपति बाइडन के साथ भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की दो बार सीधी बातचीत हो चुकी है। परन्तु भारत अपनी तटस्थता की नीति में बदलाव करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है। भारत ने हाल ही में तेल की कीमतों में हो रही वृद्धि का सामना करने के लिए रूस से सस्ता तेल भी खरीद लिया है। अमेरिका के विरोध के बावजूद भारत ने रूस के साथ एस-400 मिसाइल सौदे को निरस्त नहीं किया है। इसके अतिरिक्त यूक्रेन युद्ध का भारत पर आर्थिक प्रभाव भी पड़ रहा है। यूक्रेन संकट के कारण कच्चे तेल की कीमतों में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हो रही है। भारत अपनी तेल आवश्यकता का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा बाहर से आयात करता है। इसके साथ ही इस संकट की वजह से यूक्रेन से सूरजमुखी के तेल का आयात भी बाधित हो रहा है। यूक्रेन, भारत की 70 प्रतिशत सोयाबीन की आवश्यकता को पूरी करता है। इस संकट की वजह से भारत को होने वाली सोयाबीन की आपूर्ति भी बाधित हुई है। भारत में वर्तमान में बढ़ रही महँगाई के लिए यूक्रेन संकट भी काफी हद तक जिम्मेदार है।

कुल मिलाकर सच्चाई यह है कि विश्व की कूटनीति में बड़ी भूमिका की आकांक्षा रखने वाला भारत महज तमाशबीन बनकर नहीं रह सकता। "विश्व को भी भारत से अपेक्षा है कि वह रूस-यूक्रेन में मध्यस्थता करते हुए इसका ठोस समाधान निकाले। जी-20 जिसकी भारत अभी अध्यक्षता कर रहा है, के लगभग सभी देश चाहते हैं कि प्रधानमन्त्री मोदी इस संकट का समाधान निकाले, लेकिन अभी यह भविष्य के गर्भ में है कि भारत का रूस-यूक्रेन युद्ध पर आगे क्या रूख रहता है।"[9]

निष्कर्ष

रूस-यूक्रेन के मध्य संघर्ष के मुख्य कारण ऐतिहासिक, भू-राजनीतिक एवं वैचारिक है। जहाँ रूस, यूक्रेन को अपने स्वाभाविक प्रभाव क्षेत्र के एक हिस्से के रूप में देखता है, वहीं यूक्रेन, रूस को एक आक्रामक एवं अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखण्डता हेतु खतरे के रूप में देखता है। पश्चिमी देशों से प्रतिबन्धों में राहत तथा अन्य रियायतें प्राप्त करने के लिए रूस, यूक्रेन की सीमा पर तनाव बढ़ा रहा है। रूस के खिलाफ अमेरिका या यूरोपीय संघ द्वारा किसी भी प्रकार की सैन्य कार्रवाई विश्व के समक्ष एक बड़ा संकट उत्पन्न कर सकती है। पश्चिमी देशों का रूस-यूक्रेन युद्ध से दूर रहना ही इस युद्ध को विश्व युद्ध बनने से बचाए हुए है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में रूस के लिए निंदा प्रस्ताव का 141-5 के मतांतर से पारित होना यह इंगित करता है कि संकट के इस दौर में विश्व के अधिकांश देशों की सहानुभूति यूक्रेन के साथ है, फिर भी युद्धरत पक्षों को बातचीत की मेज पर लाने की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि शत्रुता एवं हिंसा किसी भी पक्ष के हित में नहीं है। संघर्षशील पक्षकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नागरिकों एवं नागरिक बुनियादी ढाँचे को लक्षित नहीं किया जाना चाहिए। कुछ यूक्रेनी और रूसी जीवन अभी भी बचाए जा सकते हैं।

ISSN 2348-3857

संदर्भ सूची

1. जाट, बी.सी., विश्व का प्रादेशिक भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2019, पृ.सं. 161
2. करामेर, एंड्रयू ई, बिलेफस्की, डेन (30 सितम्बर, 2022), यूक्रेन सबमिट एन एप्लीकेशन टू जॉइन नाटो, विद बिग हर्डल अहेड, द न्यूयार्क टाइम्स
3. द न्यू यॉर्कर, 23 फरवरी, 2022
4. पुतिन, व्लादिमीर, ऑन द हिस्टोरिकल यूनिटी ऑफ रशियन एण्ड यूक्रेनियन्स (आर्टिकल बाय व्लादिमीर पुतिन), 12 जुलाई, 2021, द क्रेमलिन गवर्नमेंट ऑफ रशिया
5. राजस्थान पत्रिका, 25 फरवरी, 2022
6. प्रतियोगिता दर्पण, मई, 2022, पृ.सं. 64
7. प्रतियोगिता दर्पण, जून, 2022, पृ.सं. 63
8. प्रतियोगिता दर्पण, अप्रैल, 2022, पृ.सं. 19
9. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर, 2023, पृ.सं. 103